उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया: व्याख्या के आधार

अध्याय 2

व्याख्या के लिए तैयारी

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
पवित्र आत्मा पर निर्भरता 1
प्रेरणा 2
दिव्य स्रोत 5
मानवीय साधन 8
प्रदीपन 9
मानव प्रयास की आवश्यकता 11
महत्व 11
प्रभाव 12
व्याख्या 13
वार्तालाप 13
अनुभव 14
उपसंहार 15

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया:
व्याख्या के आधार

अध्याय दो
व्याख्या के लिए तैयारी

प्रस्तावना

जब कभी हम किसी परियोजना को शुरू करते हैं, तो सही प्रकार की तैयारियों को करना बुद्धिमानी होती है। लूका के सुसमाचार में, स्वयं यीशु ने इस विचार का वर्णन किया जब उसने एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया जो एक मिनार बनाना चाहता था, लेकिन वह परियोजना को पूरा करने में विफल रहा क्योंकि उसने तैयारी नहीं की थी। ऐसे ही, जब पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने की बात आती है, तो कुछ ऐसा ही सच है। बाइबल की समझ बनाना एक जटिल परियोजना है जिसमें सभी प्रकार की गतिविधियाँ आवश्यक हैं और जो हमारे पूरे जीवन भर चलता है। इसलिए, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम बाइबल की व्याख्या करने की तैयारी सही तरीके से करें।

हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया* का यह दूसरा अध्याय है: *व्याख्या की बुनियाद,* ऐसी श्रृंखला जो यह पता लगाने के लिए समर्पित है कि मसीह के अनुयायियों को बाइबल की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। और हमने इस अध्याय का शीर्षक रखा है "व्याख्या के लिए तैयारी" क्योंकि इससे पहले कि हम पवित्र शास्त्र को पढ़ें और व्याख्या करें, हम उन कुछ बातों पर ध्यान केंद्रित करेंगे जिनके करने से मदद मिलती हैं।

इस अध्याय में, हम व्याख्या के लिए हमारी व्यक्तिगत तैयारी के दो महत्वपूर्ण तत्वों को देखेंगे। सबसे पहले, हम पवित्र आत्मा की सेवकाई पर हमारी निर्भरता पर विचार करेंगे। और दूसरा, हम स्वयं अपने मानवीय प्रयासों की आवश्यकता को संबोधित करेंगे। आइए पहले पवित्र आत्मा पर अपनी निर्भरता को देखें।

पवित्र आत्मा पर निर्भरता

जब हम पवित्र आत्मा का उल्लेख करते हैं, तो हम सभी जानते हैं कि अलग-अलग मसीही लोग भिन्न-भिन्न तरीकों से प्रतिक्रिया देते हैं। शायद आप कलीसिया की ऐसी शाखा से हैं जो आत्मा के वरदानों पर जोर देती हैं — प्रतिदिन के जीवन में उसकी उपस्थिति और सशक्तिकरण। या शायद आप कलीसिया की ऐसी शाखा से हैं जो विश्वासियों के दैनिक जीवन में आत्मा के कार्य को कम करके आंकते हैं। खैर, पवित्र शास्त्र की व्याख्या में पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में हम जो कहने जा रहे हैं, वह हम में से प्रत्येक दोनों को आश्वस्त करेगा और चुनौती देगा। जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं, तो हमें सचेत होकर अपने आप को आत्मा की सेवकाई में सौंपना चाहिए, लेकिन इसे विशेष तरीकों से करने के बारे में स्वयं बाइबल हमें सिखाती है। पवित्र आत्मा की उपेक्षा करना मुर्खता की हद होती है; लेकिन जैसी आज्ञा बाइबल देती है, हमें उन तरीकों से उस पर ध्यान देना चाहिए। जब हम पवित्र शास्त्र की व्याख्या करते हैं तो पवित्र आत्मा पर निर्भर होने का क्या तात्पर्य है?

अधिकांश सुसमाचारीक लोग सैद्धांतिक रूप से स्वीकार करते हैं कि पवित्र आत्मा, पवित्र शास्त्र की हमारी व्याख्या में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेकिन आधुनिक शैक्षणिक पुस्तकें और बाइबल वाले व्याख्या-शास्त्र पर उपदेश अक्सर पवित्र आत्मा की भूमिका पर कोई भी ध्यान नहीं देते हैं। इसके

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बजाय, हम आमतौर पर बाइबल की व्याख्या को ऐसे देखते हैं जैसे कि यह एक अवैयक्तिक घटना रही हो, एक प्रक्रिया जिसमें पाठ्यांश को समझने के लिए हम सिद्धांतों या विधियों की सूची को लागू करते हैं। लेकिन बाइबल के दृष्टिकोण से व्याख्या-शास्त्र, या पवित्र शास्त्र की व्याख्या, बहुत ही व्यक्तिगत है, क्योंकि इसमें मानवीय व्याख्याकार और पवित्र आत्मा के व्यक्ति के बीच बातचीत शामिल है।

व्याख्या में, पवित्र आत्मा पर सचेत होकर निर्भरता कम से कम दो कारणों के लिए महत्वपूर्ण है। पहला, पवित्र शास्त्र की प्रेरणा का स्रोत आत्मा था। और दूसरा, पवित्र आत्मा मानवीय व्याख्याकारों को प्रदीपन प्रदान करता है। आइए पहले प्रेरणा के विषय को देखें।

प्रेरणा

मुझे याद है कि एक बार मुझे ऐसे प्रसिद्ध लेखक से मिलने का अवसर मिला था, जिनकी पुस्तकों ने मेरे मसीही जीवन में, एक महत्वपूर्ण समय में मेरी मदद की थी। मैं उसके साथ बैठकर उसे यह बताने के लिए बहुत उत्साहित था कि उसकी पुस्तकें मेरे लिए कितनी मायने रखती हैं। बातचीत में एक बिंदु पर, मैंने उन्हें एक विशेष लाभकारी अंतदृष्टि के बारे में बताया जो मैंने उनकी पुस्तकों में से एक से लिया था। लेकिन मुझे बहुत आश्चर्य हुआ जब, उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा, “तुमने वह सब पूरी रीति से गलत समझा है! यह वह नहीं है जो मैंने कभी लिखा था!” खैर, कम से कम कहूँ तो, मैं शर्मिंदा था। लेकिन एक गहरी सांस लेकर उनसे यह स्वीकार करना मुझे याद है, “ठीक है, मुझे लगता है कि पुस्तक को जिस व्यक्ति ने लिखा उसे मेरे से बेहतर रीति से पता है कि इसका अर्थ क्या है।”

अच्छा तो, कई मायनों में, बाइबल के साथ भी यही बात सत्य है। परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने पवित्र शास्त्र के प्रत्येक वचन को प्रेरित किया। और इस मायने में, वह पवित्र शास्त्र का लेखक है। इसलिए, यह सिर्फ इस कारण से है कि हमें उसकी पुस्तक में उससे अंतदृष्टि लेनी चाहिए। एक बहुत ही बुनियादी अर्थ में, प्रेरणा का सिद्धांत कहता है कि:

> **पवित्र आत्मा ने मनुष्यों को परमेश्वर के प्रकाशन को पवित्र शास्त्र के रूप में लिखने के लिए प्रेरित किया और उनके कार्य को इस तरह से संचालित किया, जिसने उनके लेखनों को अचूक बनाया।**

जिस तरीके से पतरस ने इस विचार को 2 पतरस 1:20-21 में व्यक्त किया उसे सुनिए:

> **पवित्र-शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे (2 पतरस 1:20-21)।**

इस अनुच्छेद में, पतरस ने कहा कि सभी बाइबल की भविष्यद्वाणी पवित्र आत्मा से सृजित हुई और कि आत्मा ने मनुष्यों को परमेश्वर का प्रकाशन लिखने के लिए उभारा। इस प्रक्रिया ने सुनिश्चित किया कि जो उन्होंने लिखा वह पूरी रीति से सत्य था, और मानवीय लेखकों के वचन परमेश्वर के वचन भी थे। और 2 तीमुथियुस 3:16 में, पौलुस ने इंगित किया कि पूरा पवित्र शास्त्र इसी रीति से प्रेरित था।

> **बाइबल जैविक सत्य है, जो शुरू से अंत तक आपस में जुड़ा हुआ है, एक अद्भुत पुस्तक जो कि जीवन का वचन है, जीवन पर आधारित है, जो जीवन की सभी जरूरतों को पूरा करती है। यह सत्य है क्योंकि इसके लेखक के रूप में इसके पास पवित्र आत्मा है, और पवित्र आत्मा के लिए स्वयं के खिलाफ जाना या स्वयं का विरोध करना असंभव है ... इससे कोई फर्क नहीं पड़ता यदि आप यिर्मयाह**

> या पौलुस या ओबद्याह या योना पढ़ते हैं; वे सभी भिन्न-भिन्न वचनों का उपयोग करते हैं, लेकिन उन वचनों को लिखने की भावना एक समान है, क्योंकि एक ही आत्मा ने उन वचनों को प्रेरित किया जो चुने गए थे।
>
> — रेव्ह. डा. स्टीफन टॉन्ग, अनुवादित

मसीह और उसके शिष्य इस विचार के लिए प्रतिबद्ध थे कि पवित्र आत्मा ने पवित्र शास्त्र के लेखकों को प्रेरित किया। और जिन लोगों ने मसीह का अनुसरण करने का प्रयास किया है, उन्होंने हमेशा कुछ अर्थों की पुष्टि की है जिनमें पवित्र शास्त्र को प्रेरित था। फिर भी, जो लोग मसीही विश्वास को मानते हैं, वे प्रेरणा के स्वभाव को समझने के लिए भिन्न-भिन्न तरीकों से प्रवृत रहे हैं।

अपने उद्देश्यों के लिए, हम प्रेरणा के तीन दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो आधुनिक कलीसिया में प्रसिद्ध हैं। सबसे पहले, कुछ लोग उस पर विश्वास करते हैं जिसे हम प्रेरणा का "रूमानी" दृष्टिकोण कहेंगे। इस दृष्टिकोण के अनुसार, पवित्र आत्मा ने बाइबल के लेखकों को उसी तरह से प्रेरित किया जिस तरह से धर्मनिरपेक्ष कवि या संगीतकार लोग अपने कार्यों को लिखने के लिए अभिप्रेरित हो सकते हैं। उनके विचार में, पवित्र शास्त्र परमेश्वर का अचूक सत्य नहीं है, बल्कि मानवीय लेखकों के व्यक्तिगत सोच-विचार एवं मान्यताएं हैं।

दूसरा, अन्य मसीही लोग उस पर विश्वास करते हैं जिसे हम "यांत्रिक" प्रेरणा कह सकते हैं। इस दृष्चिकोण के अनुसार, बाइबल के लेखकों ने जब पवित्र शास्त्र को लिखा तो वे अपेक्षाकृत निष्क्रिय थे। परमेश्वर की आत्मा ने वास्तव में बाइबल को बोला और मानवीय लेखकों ने वह लिखा जो उसने कहा।

तीसरा, अधिकांश सुसमाचारीय मसीही लोग पुष्टि करते हैं कि प्रेरणा का आत्मा वाला कार्य "जैविक" था। इस विचार के अनुसार, पवित्र आत्मा ने मानवीय लेखकों को लिखने के लिए प्रेरित किया और उनके वचनों की निगरानी की एवं उनको निर्देशित किया। परिणामस्वरूप, पवित्र शास्त्र के वचन परमेश्वर के वचन हैं। उसी समय, जब पवित्र आत्मा ने उनके लेखन की निगरानी की तो उसने मानव लेखकों के व्यक्तित्वों, अनुभवों, दृष्टिकोणों, और इरादों का प्रयोग किया। इसलिए, पवित्र शास्त्र के वचन इसके मानव लेखकों के भी वचन हैं। यह तीसरा दृष्टिकोण प्रेरणा के स्वभाव के बारे में पवित्र शास्त्र की स्वयं की गवाही को सबसे अच्छी तरह से दर्शाता है।

> पवित्र शास्त्र को पढ़ना एक बहुत ही आकर्षक प्रक्रिया है, क्योंकि इसे कई लेखकों द्वारा कई सैंकड़ों वर्षों के दौरान रचा गया था, और इसलिए जिस तरह से वे लिखते हैं, जिस तरह से वे अपने आसपास के लोगों से बातचीत करते हैं, और जिस भाषा का वे उपयोग करते हैं, तो आप उन व्यक्तित्वों को उसमें से प्रतिबिंबित होता हुआ देखते हैं। और इसलिए, उनके व्यक्तित्व परमेश्वर के वचन के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि परमेश्वर उन्हें कई भिन्न-भिन्न तरीकों में उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, आपके पास याजक हैं जो लिखते हैं, आपके पास एक किसान है जो लिखता है, एक चरवाहा जो लिखता है, आपके पास एक राजा है जो लिखता है, आपके पास एक चिकित्स्य डॉक्टर है जो लिखता है, और आपके पास ऐसा व्यक्ति है, जो हमारी संस्कृति में, "इब्रानी विश्वविद्यालय" से पीएच.डी प्राप्त होगा, प्रेरित पौलुस, जिसके पास पुराने नियम के साथ-साथ यूनानी संस्कृति और यूनानी भाषा में अभूतपूर्व समझ है और वह शायद किसी भी अन्य भाषा से बेहतर जो कभी रही हो, यूनानी भाषा को लेने और ईश्वरीय-ज्ञान की सोच की अभिव्यक्ति के लिए इसकी उपयुक्तता का अध्ययन करने में सक्षम है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

— डॉ. हॉवर्ड आएरिक

उदाहरण के लिए, 2 पतरस 3:15 में जिस रीति से पतरस ने प्रेरणा के जैविक स्वरूप का वर्णन किया उसे सुनिए:

> हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है (2 पतरस 3:15)।

इस अनुच्छेद में पतरस ने उजागर किया कि पौलुस की पत्रियों को कैसे देखना चाहिए। एक ओर, उसने कहा कि, "पौलुस ने लिखा।" इस तरह, पौलुस की पत्रियों में उसकी भागीदार की पुष्टि पतरस ने की। लेकिन दूसरी ओर, पतरस ने इन पत्रियों को सिर्फ पौलुस का ही नहीं बताया। इसके बजाय, उसने लिखा कि "उस ज्ञान के अनुसार जो उसे परमेश्वर ने दिया" पौलुस ने लिखा। पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के कारण पौलुस की पत्रियों ने परमेश्वर के ज्ञान को चित्रित किया।

> यह परमेश्वर के वचन के बारे में सत्य है: पवित्र शास्त्र में प्रत्येक वचन पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित है। यह परमेश्वर के वचन के बारे में भी सत्य है: उन शब्दों में हर एक वास्तविक मनुष्य द्वारा और एक अद्‌भुत तरीके से लिखा गया था, परमेश्वर ने उन बाइबल लेखकों में से प्रत्येक के वरदानों और अनुभवों को संप्रभुतापूर्वक संचालित किया, जिससे कि उनका व्यक्तित्व, उनकी साहित्यिक शैली दिखाई देती है, और उसी समय में बाइबल पूरी तरह से परमेश्वर का वचन है। इसलिए, उदाहरण के लिए, जब आप यिर्मयाह को पढ़ रहे हैं, तो आपको परमेश्वर के लोगों के लिए उसके दुःख और जूनून का भाव दिखता है; जब आप लूका के सुसमाचार को पढ़ते हैं, तो आपको चिकित्स्य विवरणों के लिए उसकी सावधानीपूर्वक जाँच और इतिहास एवं सटिक इतिहास के लिए उसके प्रेम का भाव मिलता है। मेरा तात्पर्य है, कि बाइबल के इन लेखकों के व्यक्तित्व और उनके अनुभव पवित्र शास्त्र से होकर दिखाई देते हैं, लेकिन यह परमेश्वर के वचन में परमेश्वर के स्वयं के किसी भी अधिकार और प्रेरणा और सामर्थ्य को खोए बिना होता है।
>
> — डॉ. फिलिप्प रायकेन

> अच्छा तो, जो कोई भी पवित्र शास्त्र को पढ़ता है वह देख सकता है कि अलग-अलग तरीकों के कारण जिनमें लेखक स्वयं को व्यक्त करते हैं, और अलग-अलग चुनावों के कारण जिनमें लेखक सामग्री को प्रस्तुत करते हैं, शैलियों में अंतर है और लेखक अपने स्वयं के वरदानों का उपयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, सुसमाचार में हमारे पास मरकुस है जो एक्शन दृश्यों के साथ बहुत कुछ नहीं करता है ... या एक्शन दृश्यों के साथ, बल्कि, बहुत कुछ करता है, लेकिन अपने प्रवचनों को बहुत कम रखता है, जबकि यूहन्ना का सुसमाचार प्रवचनों से भरा पड़ा है, जो एक अलग रुचि को दर्शाता है। इस तरह ये लेखक अपनी शैली, अपनी पृष्ठभूमि, अपनी स्वयं की अभिव्यक्ति को लिख रहे हैं, और यह उन भिन्नताओं से बहुत स्पष्ट है जो हम विभिन्न पुस्तकों में उन विषयों में देखते हैं। जो वे कहते हैं उसे निर्देशित करने के और जो वे कहते हैं उसके पीछे खड़े रहने के मायने में

> परमेश्वर उन्हें प्रेरित कर रहा है, लेकिन वह उन्हें स्वयं उनके तरीके से व्यक्त करने दे रहा है।
>
> — डॉ. डैरेल एल. बॉक

हम जैविक प्रेरणा के दो पहलूओं को देखेंगे जो व्याख्या के कार्य के लिए हमें स्वयं को उन्मुख करने में मदद करते हैं: सबसे पहला, यह तथ्य कि पवित्र आत्मा पवित्र शास्त्र का दिव्य स्रोत था; और दूसरा, तथ्य यह, कि उसने मानव के माध्यम से पवित्र शास्त्र के निर्माण के लिए कार्य किया। आइए सबसे पहले इस विचार को देखें कि बाइबल का अंतिम निर्णायक दिव्य स्रोत आत्मा है।

दिव्य स्रोत

ऐसे व्यक्ति के समान जिसने संपूर्ण पवित्र शास्त्र को प्रेरित किया, पवित्र आत्मा के पास बाइबल के अर्थ और उस अर्थ को बताने के तरीके के बारे में गहन ज्ञान है। इसलिए, पवित्र शास्त्र के निर्णायक लेखक के रूप में पवित्र आत्मा के साथ व्यक्तिगत रूप से सहभागिता करना इसकी व्याख्या की तैयारी में शामिल है। हमें विनम्रता से, उसके प्रति संपूर्ण सम्पर्ण में पवित्र शास्त्र को पढ़ना है।

> मैं सोचता हूँ, कि बाइबल की गंभीर, गहन समझ के लिए पवित्र आत्मा पर निर्भर होना अत्यावश्यक है। यह स्पष्ट है, मुझे लगता है, कि सिर्फ बाइबल के संदेश को समझने के लिए किसी को पवित्र आत्मा पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं है। यदि ऐसा होता, तो बाइबल का कोई भी सुसमाचारीय कार्य नहीं होता। लेकिन इसे गहराई से समझने के लिए, यह सोचने का अच्छा कारण है कि पवित्र आत्मा पर भरोसा करना एकदम महत्वपूर्ण है। बेशक, इसका कारण यह है कि कलीसिया विश्वास करती है, और मैं निश्चित रूप से इसके दावे से सहमत हूँ, कि पवित्र आत्मा ने पवित्र शास्त्र के लेखकों को प्रेरित किया। और इसलिए इन लेखकों के माध्यम से पवित्र आत्मा ने जो कहने का इरादा किया उसे पूरी तरह से समझने के लिए, इस आत्मिक स्रोत के साथ, जैसा कि वह था, हमें संपर्क में रहने की आवश्यकता है।
>
> — डॉ. डेविड आर. बाउर

कई अवसरों पर, बाइबल के लेखकों ने जब उन्होंने पवित्र शास्त्र के साथ कार्य किया तो खुले तौर पर और प्रत्यक्ष रूप में पवित्र आत्मा की प्रेरणा को स्वीकार किया। मानवीय लेखकों की भूमिका को नकारे बिना, उन्होंने माना कि पवित्र शास्त्र का निर्णायक लेखक पवित्र आत्मा है। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 4:25 में, पतरस और यूहन्ना ने भजन 2, की पुष्टि में कलीसिया की अगवाई करते हुए कहा:

> तू ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा (प्रेरितों के काम 4:25)।

बहुत कुछ इसी तरह, इब्रानियों 3:7-8 भजन 95:7-8 के बारे में इस तरीके से बात करता है:

> अत: जैसा पवित्र आत्मा कहता है: “यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मन को कठोर न करो” (इब्रानियों 3:7-8)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इन और कई अन्य अनुच्छेदों में, बाइबल के लेखकों ने पवित्र आत्मा को प्रेरणा देने वाले के रूप में पहचाना, और इस तरह, पवित्र शास्त्र का निर्णायक लेखक। और जब उन्होंने पवित्र शास्त्र को पढ़ने, व्याख्या करने और लागू करने के लिए स्वयं को तैयार किया तो उन्होंने प्रेरणा की इस समझ पर भरोसा किया

पवित्र शास्त्र की दिव्य उत्पत्ति की सबसे महत्वपूर्ण निहितार्थों में से एक बाइबल की निर्विवाद सत्यता है। दुर्भाग्य से, समय-समय पर, समझदार लोग कहते हैं कि वे पवित्र शास्त्र की प्रेरणा में आत्मा की भागीदारी पर विश्वास करते हैं, लेकिन वे इस बात की पुष्टि नहीं करते हैं कि पवित्र आत्मा ने पवित्र शास्त्र को त्रुटि से बचाया था। लेकिन यूहन्ना 14:16-17 में पवित्र आत्मा के बारे में यीशु ने जो कहा उसे सुनिए:

> **पिता ... वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे ... सत्य का आत्मा (यहन्ना 14:16-17)।**

जब यीशु ने पवित्र आत्मा को "सत्य का आत्मा" कहा, तो उसने संकेत दिया कि पवित्र आत्मा पूरी तरह से सत्य है। इसलिए, हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि वे पवित्र शास्त्र जिन्हें आत्मा ने प्रेरित किया, पूरी तरह से सत्य भी हैं। वे झूठ नहीं बोलते; वे स्वयं का विरोधाभास नहीं करते। और इसलिए, व्याख्या के लिए हमारी तैयारी के हिस्से में पवित्र आत्मा की और उस पवित्र शास्त्र की परम विश्वसनीयता की पुष्टि करना जिसे उसने प्रेरित किया शामिल होना चाहिए।

> **पौलुस तीमुथियुस को बताता है कि परमेश्वर का वचन प्रेरित था — *थियोपनेयुसटॉस — यह* परमेश्वर द्वारा बाहर श्वास फूँका गया था। और यदि यह परमेश्वर द्वारा बाहर श्वास फूँका गया था, तो हम जानते हैं कि स्रोत सिद्ध है, स्रोत अचूक है, और जो कुछ उससे पैदा होता है उसे समान रूप से सिद्ध और अचूक होना चाहिए। वह, तब, प्रेरणा है। यदि आत्मा ने इसे प्रेरित किया, और जब मैं वचन का अध्ययन करता हूँ तो यदि अब आत्मा मुझ में वास करता है, तो मुझे प्रदीपन और समझ देने के लिए, मुझे आत्मा पर आश्वस्त होने, भरोसा करने की आवश्यकता है, क्योंकि उसने इसे इस रीति से प्रेरित किया कि मेरा अध्ययन उस व्यक्ति की समझ पर आधारित है जिसने वचन को आरम्भ में प्रेरित किया। किसी भी पुस्तक के लेखक से अच्छा शिक्षक और कोई नहीं हो सकता, और पुस्तक का लेखक आत्मा है। और इसलिए, जब वह शिक्षक जो हमारे दिमागों को रोशन करता है आत्मा है, तो जो प्रेरित किया गया था उसके बारे में जो कहा गया था, उसकी मुझे बेहतर समझ देने वाला स्वयं शिक्षक की तुलना में जिसने उसे आरम्भ में लिखा, और कोई नहीं हो सकता।**
>
> **— डॉ. मिगुएल नूनेज़, अनुवादित**

हिप्पो के बिशप, अगस्तीन, ने अपने पत्र 82, अध्याय 1, अनुच्छेद 3 में इस विश्वास को व्यक्त किया, जहाँ उन्होंने इन बातों को लिखा:

> **मैंने इस आदर और सम्मान को केवल पवित्र शास्त्र की वैधानिक पुस्तकों को समर्पित करना सीखा है: सिर्फ इन्हीं के लिए मैं सबसे ज्यादा दृढ़ता से विश्वास करता हूँ कि लेखक पूरी रीति से त्रुटिहीन थे।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अगस्तीन के शब्द प्रांभिक कलीसिया में पवित्र शास्त्र की सत्यता के प्रचलित दृष्टिकोण को दर्शाते हैं और स्वयं बाइबल में दिए गए दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

अब, बाइबल से परिचित हर कोई जानता है कि पवित्र शास्त्र के कई ऐसे भाग हैं जो बहुत अच्छे व्याख्याकारों को भी चुनौती देते हैं। समय-समय पर, पवित्र शास्त्र विज्ञान, हमारे व्यक्तिगत अनुभवों और यहाँ तक कि पवित्र शास्त्र के अन्य अनुच्छेदों का विरोधाभास करते प्रतीत होते हैं। इन स्पष्ट समस्याओं से हमें कैसे निपटना चाहिए? खैर, व्याख्याकारों के पास इस प्रकार की समस्याओं को सुलझाने के विभिन्न तरीके हैं। और ज्यादातर, उनके समाधान पवित्र शास्त्र के चरित्र के कारण नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर के प्रति व्याख्याकारों के रवैये के कारण भिन्न होते हैं।

एक ओर, जो लोग इस बात से इनकार करते हैं कि पवित्र आत्मा ने आधिकारिक रूप से बाइबल को प्रेरित किया है, पवित्र शास्त्र की व्याख्या आलोचनात्मक रीति से, आत्मा के अधिकार के ऊपर अपनी समझ को बढ़ाकर करते हैं। दूसरी ओर, जो लोग आत्मा के आधिकारिक प्रेरणा को स्वीकार करते हैं, वे आशा करते हुए और इसे सत्य और सामंजस्यपूर्ण मानते हुए, यहाँ तक कि जब वे इसकी सत्यता को दिखा या प्रमाणित नहीं कर सकते हैं, बाइबल को विनम्रतापूर्वक पढ़ते हैं।

> जब हम बाइबल को पढ़ते हैं तो हम सिर्फ एक और मानवीय पुस्तक को नहीं पढ़ते हैं। हम ऐसी पुस्तक को पढ़ते हैं, जो चमत्कारिक रूप से परमेश्वर द्वारा प्रेरित है। इसका अर्थ है कि हम बाइबल को सिर्फ ऐसे नहीं पढ़ सकते जैसे हम दूसरी पुस्तक को पढ़ते हैं। अब यह कहना होगा कि, परमेश्वर ने हमारी भाषा में, हमारी शैली में, स्वयं को संप्रेषित किया है, और इसलिए सरल साहित्यिक व्याख्या के उस बिंदु से शुरू करते हैं जो वहाँ लिखा है। लेकिन यदि हम वहाँ रुक जाते हैं, तो हम भूल जाते हैं कि यह एक पवित्र पुस्तक है जिसे परमेश्वर ने न सिर्फ शुरूआत में प्रेरित किया, बल्कि हमारे हृदयों को निरंतर प्रेरित कर रहा है, मेरे मानवीय पतनशीलता के कारण, मेरी मानव रूपी पापमयता पवित्र शास्त्र की सच्चाई को न ढांपे इसलिए, एक पाठक और व्याख्याकार के रूप में यह समझने हेतु कि इस अनुच्छेद के माध्यम से परमेश्वर मेरे से क्या कहना चाहता है, पवित्र आत्मा को मुझ में लगातार कार्य करना पड़ता है।
>
> — डॉ. जॉन ओसवॉल्ट

> व्याख्या में पवित्र आत्मा की क्या भूमिका है? एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न। इस बात के लिए, कि पवित्र आत्मा ने पवित्र शास्त्र को प्रेरित किया, इसलिए स्वाभाविक रूप से हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहेंगे कि, पवित्र शास्त्र का प्रमुख लेखक कौन है और हम उसके बारे में क्या जान सकते हैं। परमेश्वर कौन हैं, उस बारे में वचन के माध्यम से पवित्र आत्मा हमें सिखाता है। दूसरी बात यह कि पवित्र शास्त्र की सही समझ के लिए पवित्र आत्मा अत्यंत आवश्यक है। 1 कुरिन्थियों 2 में यह ठीक इसी बात के बारे में चर्चा करता है। पद 14 में यह कहता है कि:
>
> परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है (1 कुरिन्थियों 2:14)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> यही वह व्यक्ति है जिसके पास पवित्र आत्मा है। इसलिए हमें परमेश्वर से पवित्र आत्मा को भेजने और हमें अपनी आत्मा से भरने के लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता है ताकि हम विश्वासयोग्य रूप से उस बात को जान सकें जो वह अपने वचन में सिखा रहा है।
>
> — डॉ. वर्न पोएथ्रेस

इस तथ्य को देखने के बाद कि पवित्र आत्मा पवित्र शास्त्र का दिव्य स्रोत है, जैविक प्रेरणा का दूसरा सिद्धांत जिसका हम उल्लेख करेंगे वह है कि पवित्र आत्मा ने पवित्र शास्त्र को लिखने के लिए मानवीय साधन का प्रयोग किया।

मानवीय साधन

कभी-कभी मसीही लोग ऐसा सोचते हैं मानों वे पसंद करेंगे यदि परमेश्वर ने प्रत्यक्ष रूप से हमें बाइबल दी होती, जैसा कि मॉर्मन और मुसलमान लोग अपनी पवित्र पुस्तकों को प्राप्त करने का दावा करते हैं। मॉर्मन लोगों का मानना है कि परमेश्वर ने मॉर्मन की पुस्तक पूर्ण रूप में जोसफ स्मिथ की दी, और कुरान के बारे में स्वर्ग से उतरने के इसी तरह के दावे को इस्लाम मानता है। लेकिन यह वह तरीका नहीं है जिस रीति से परमेश्वर ने हमें बाइबल दी।

इसके बजाय, परमेश्वर ने मानवीय लेखकों के माध्यम से पवित्र शास्त्र की रचना करवाई; उसने विभिन्न मनुष्यों की योग्यताओं और क्षमताओं के माध्यम से स्वयं को प्रकट किया। इसमें कोई शक नहीं कि, पवित्र शास्त्र में मानवीय लेखकों के किसी भी प्रभाव या उपस्थिति को पवित्र आत्मा हटा सकता था। वह हर एक अनुच्छेद को उजागर कर सकता था ताकि हम कभी यह न बता पाते कि एक भाग एक मनुष्य द्वारा लिखा गया था और दूसरा भाग किसी अन्य के द्वारा। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। अपने अनंत ज्ञान में, उसने मानवीय लेखकों को शामिल करने और उनके विचारों, उद्देश्यों और व्यक्तित्वों के माध्यम से कार्य करने को चुना। इस तरह, पवित्र शास्त्र की हमारी व्याख्या में पवित्र आत्मा पर निर्भर होने के हिस्से में उस तरीके को सम्मान देना है जिसमें उसने पवित्र शास्त्र को जैविक रूप से प्रेरित किया, और उन मनुष्यों पर भरोसा करना है जिन्हें उसने प्रेरित किया। इसलिए, यदि हम बाइबल की उस तरीके से व्याख्या करने जा रहे हैं जैसा वह हम से चाहता है, तो हमें समझना चाहिए कि पवित्र शास्त्र को अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा लिखा गया था, और यह कि वे उस मानवीय लेखनकारिता की विविधता को दर्शाते हैं।

उदाहरण के लिए, सुसमाचार के लेखक मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना ने मूल रूप से यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान की एक जैसी घटनाओं को लिखा है। लेकिन उनकी पुस्तकें एक जैसी नहीं हैं। मत्ती मरकुस से भिन्न है। मरकुस लूका से भिन्न है। लूका यूहन्ना से भिन्न है। और यह पवित्र शास्त्र की कमी नहीं है। यह पवित्र शास्त्र को प्रेरित करने के लिए उस तरीके का उत्पाद है जिसे पवित्र आत्मा ने चुना।

क्योंकि पवित्र शास्त्र जैविक रीति से प्रेरित थे, इसलिए हमें उनके दिव्य लेखनकारिता और उनके मानवीय लेखनकारिता दोनों को हमेशा स्वीकार करना होगा। जब हम बाइबल की व्याख्या करने के लिए स्वयं को तैयार करते हैं, तो यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि हम वह खोज रहे हैं जो पवित्र आत्मा का अर्थ था। लेकिन यदि हम वहाँ रुक जाते हैं, तो हमारी तैयारी पूरी नहीं होती है। हमें इस बात को भी ध्यान में रखना है कि मनुष्यों के माध्यम से, उनके व्यक्तित्वों, उनके अनुभवों, दृष्टिकोणों और महत्वों के माध्यम से आत्मा कार्य करता है। पवित्र शास्त्र का प्रत्येक वचन परमेश्वर का वचन है। लेकिन परमेश्वर का वचन उन मनुष्यों के माध्यम से हमारे पास पहुँचा जो आत्मा से प्रेरित थे, और उन्होंने अलग-अलग समयों पर

अलग-अलग तरीकों में लिखा। इसलिए, हमें सदैव इस समझ के साथ स्वयं को तैयार करना चाहिए कि परमेश्वर की आत्मा ने बाइबल के विभिन्न मानवीय लेखकों के माध्यम से विविध तरीकों में बोला।

यह देखने के बाद कि किस रीति से पवित्र शास्त्र की प्रेरणा पवित्र आत्मा पर हमारी निर्भरता की माँग करती है, आइए उस तरीके की ओर अपने ध्यान को लगाएं जिसमें हम उसके प्रदीपन के जारी रहने वाले कार्य पर भी निर्भर हैं।

प्रदीपन

बाइबल की व्याख्या-शास्त्र के संदर्भ में, प्रदीपन को निम्न रीति से परिभाषित किया जा सकता है:

> मनुष्य के लिए पवित्र शास्त्र की उचित समझ प्रदान करने वाला पवित्र आत्मा का कार्य।
>
> हम दो कार्यों में अंतर कर सकते हैं। एक प्रेरणा का कार्य है जहाँ पवित्र आत्मा, पवित्र शास्त्र के मूल मानव लेखकों के पास आता है और उन्हें सशक्त करता है ताकि वे जो लिखते हैं वह परमेश्वर का वचन हो, परमेश्वर जो कहता है और न कि सिर्फ जो मनुष्य कहता है। जहाँ पवित्र आत्मा हमारे साथ खड़ा है वह प्रदीपन है। वह मसीही विश्वासियों में वास करता है और जो उसने बाइबल में प्रेरित किया है उसे समझने और प्राप्त करने के लिए हमारी बुद्धि को खोलता है।
>
> — डॉ. वर्न पोएथ्रेस

प्रदीपन के माध्यम से, पवित्र आत्मा हमें अपने वचन का ज्ञान प्रदान करता है। और यह ज्ञान पूरी रीति से ज्ञानात्मक नहीं है। यह हमारी कल्पना, अंतर्ज्ञान, भावना, इच्छाशक्ति, प्रेरण, अभिलाषा, नैतिक विवेक को भी प्रभावित करता है — हमारा कोई भी हिस्सा जो पवित्र शास्त्र की हमारी समझ में योगदान देता है उसे आत्मा द्वारा प्रबुद्ध किया जा सकता है।

कभी-कभी मसीही लोग मान लेते हैं कि यदि हम सिर्फ सावधानीपूर्वक सोचते हैं, तो हम वह समझ पाएंगे जो पवित्र शास्त्र सिखाता है। लेकिन वास्तव में, मनुष्य पाप से इतने अधिक प्रभावित हैं कि हम अपने दम पर परमेश्वर की बातों को नहीं समझ सकते। हमें स्वयं परमेश्वर की — पवित्र आत्मा की — हमें प्रदीप्त करने के लिए बहुत सख्त जरूरत है। 1 कुरिन्थियों 2:11-13 में जिस तरह से पौलुस ने आत्मा के प्रदीपन के विषय में बातचीत की उसे सुनिए:

> परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा। परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं (1 कुरिन्थियों 2:11-13)।

यहाँ, पौलुस ने समझाया कि आत्मा के कार्य के बिना, हमारे पास जैसा कि होना चाहिए परमेश्वर के विचारों को समझने की कोई आशा नहीं है। इस कारण से पवित्र शास्त्र की हमारी व्याख्या के लिए आत्मा का व्यक्तिगत प्रदीपन इतना महत्वपूर्ण है।

आत्मा का प्रदीपन एक ऐसा विषय है जिसे शायद ही कभी विस्तार से संबोधित किया गया है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण संबोधन में से एक ज़ॉन ओवेन के प्रसिद्ध लेख में दिखाई देता है, जो 1616 से

1683 तक रहे थे। ओवेन के लेख, *स्पिरीचुअल इल्लुमीनेशन प्रूव्ड फ्रॉम स्क्रिपचर* में, उसने पवित्र आत्मा के प्रदीपन को इस रीति से संक्षेप में प्रस्तुत किया:

> सभी दिव्य सत्य जिन्हें जानना, और विश्वास करना आवश्यक है, ताकि हम विश्वास और आज्ञाकारिता में परमेश्वर के लिए रह सकें, या मसीह के पास आ, और उसमें बने रह सकें; साथ में, बहकाने वालों से सुरक्षित रह सकें, वे सब पवित्र शास्त्र में निहित हैं, या दिव्य प्रकाशन में हमारे लिए प्रस्तुत किए गए हैं। इन्हें हम उनके उल्लिखित उद्देश्यों के तहत, अपने आप से नहीं समझ सकते हैं; क्योंकि यदि हम ऐसा कर पाते, तो इसकी कोई जरूरत नहीं पड़ेगी कि हमें पवित्र आत्मा के द्वारा उन्हें सिखाया जाता। लेकिन यह ऐसा है, वह हमें इन सभी बातों को सिखाता है, उन्हें पहचानने, समझने, और स्वीकार करने के लिए सक्षम बनाता है।

ओवेन ने ठीक ही बताया कि जो चीज़ें हमें "विश्वास और आज्ञाकारिता में परमेश्वर में जीने," के लिए "मसीह में आने और बने रहने," के लिए और "बहकाने वालों से सुरक्षित रहने" के लिए आवश्यक है वह सब कुछ पवित्र शास्त्र हमें देता है। लेकिन जितना भी अविश्वासी लोग अपने दम पर बाइबल से समझ पाने में सक्षम हो सकते हैं, पवित्र शास्त्र को "इन उद्देश्यों के लिए" "हम नहीं समझ सकते, जब तक कि "उन्हें पहचानने, समझने और स्वीकार करने के लिए" पवित्र आत्मा हमें सक्षम न बनाए।

> जब 2 तिमुथियुस 3:16 पूरे पवित्र शास्त्र के बारे में परमेश्वर द्वारा श्वास बाहर लेने के रूप में बात करता है, तो यह इस विचार को इंगित करता है कि बाइबल प्रेरित है, या शायद ज्यादा सही रूप में "श्वास निकालना" — बाहर साँस लेना — परमेश्वर के हृदय से, और इसलिए पवित्र शास्त्र स्वयं परमेश्वर के अस्तित्व से आता है। जब हम किसी चीज़ से प्रेरित होने की बात करते हैं, तो हम उस चीज़ के बारे में उत्साहित होने या समझने की बात करते हैं, और "प्रदीपन" वाला शब्द कुछ-कुछ उस अवधारणा को समझ लेता है, कि हमें अवबोध और समझ देने के लिए हमें पवित्र आत्मा की जरूरत है, जिसने अचूक रीति से परमेश्वर के वचन को प्रेरित किया, ताकि हमारी बुद्धि परमेश्वर के सत्य के द्वारा प्रकाशित हो सके, ताकि हम परमेश्वर के सत्य को स्पष्ट रूप से समझ सकें।
>
> — डॉ. सायमन वायबर्ट

> प्रेरणा वह है जो परमेश्वर ने तब किया जब उसने लेखक को प्रेरित किया, इसलिए, अब हम आगे को प्रेरित नहीं हो रहे हैं। लेकिन हमें प्रदीप्त किया जा रहा है, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर, पवित्र आत्मा के द्वारा, प्रकाश चमका रहा है, हमें आत्मिक ज्ञान दे रहा है और यह समझने में मदद करने के लिए हमें क्षमता प्रदान कर रहा है कि ये वचन क्या कह रहे हैं।
>
> — रेव्ह. थेड जेम्स, जूनियर

अब जबकि हमने देख लिया है कि पवित्र आत्मा पर हमारी निर्भरता कितनी महत्वपूर्ण है, तो आइए पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने के लिए हमारी तैयारी के हिस्से के रूप में मानव प्रयास की आवश्यकता का पता लगाएं।

मानव प्रयास की आवश्यकता

हम दो भागों में मानव प्रयास की हमारी आवश्यकता पर विचार करेंगे। सबसे पहले, हम मानव प्रयास के महत्व पर गौर करेंगे। और दूसरा, हम कुछ प्रभावों का सर्वेक्षण करेंगे जो हमारे मानव प्रयास को सूचित करते हैं। आइए सबसे पहले मानव प्रयास के महत्व को देखें।

महत्व

अक्सर कई बार, समझदार मसीही लोग बाइबल की व्याख्या में परमेश्वर की आत्मा के कार्य को मानव प्रयास के विपरीत के रूप में मानते हैं। यह सत्य है कि कभी-कभी जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं तो आत्मा हमारे प्रयासों से बढ़कर, उनके बिना, यहाँ तक कि उनके विरूद्ध कार्य करता है। लेकिन जब हम पवित्र शास्त्र की व्याख्या करते हैं तो यह मानव प्रयास की आवश्यकता को समाप्त नहीं करता। हमारी कड़ी मेहनत के माध्यम से, या उसके साथ जुड़ कर वह सबसे साधारण तरीका है जिसमें आत्मा हमें प्रकाशित करता है। इस कारण से, जबकि हमें बाइबल की व्याख्या को एक मानव प्रयास सोचकर कम करके आँकना नहीं चाहिए, फिर भी पवित्र शास्त्र को सही रीति से समझने के लिए बहुत मेहनत भरा काम करने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है।

दुर्भाग्य से, कुछ समूहों में, समझदार मसीह के अनुयायी जब बाइबल पढ़ने के लिए तैयार होते हैं तो वे उस हर बात को कम करके आँकते हैं जो मानव प्रयास जैसा लगता है। इसके बजाय, वे अक्सर एक आत्मिक दृष्टिकोण को पसंद करते हैं, जहाँ बाइबल के पाठ्यांश का संदेश सीधे परमेश्वर से निष्क्रिय पाठकों के लिए आता है। ये विश्वासी सही रूप में पवित्र आत्मा पर हमारी निर्भरता के महत्व को स्वीकार करते हैं। और इसके लिए हम उनकी प्रशंसा कर सकते हैं। लेकिन मानव प्रयासों से उनका कतराना बाइबल संबधी नहीं है। जैसा कि पौलुस ने 2 तिमुथियुस 2:15 में लिखा:

> अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो (2 तीमुथियुस 2:15)।

इस पद में, पौलुस ने तीमुथियुस को एक ऐसा पुरुष बनने के लिए प्रोत्साहित किया जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। लेकिन उस रूपक पर ध्यान दें जिसका उपयोग पौलुस ने अपने दृष्टिकोण को अवगत कराने के लिए किया। तीमुथियुस को “एक काम करने वाला” बनना था। यहाँ प्रेरित ने यूनानी शब्द *एरगेट्स* का उपयोग किया, ऐसा शब्द जो अक्सर खेत में मज़दूरों के लिए संदर्भित किया जाता था। और तीमुथियुस को अपना सर्वश्रेष्ठ करना था, या जैसा कि कुछ अनुवादकों ने इसे कहा है, उसे “मेहनती होना” था।

एक मेहनती, परिश्रम करने वाले खेत के मज़दूर के समान बाइबल के व्याख्याकार की तुलना करके, पौलुस ने तीमुथियुस को पवित्र शास्त्र के उसके अध्ययन में पुरजोर प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन वास्तव में इसका क्या अर्थ है? और पवित्र आत्मा पर हमारी निर्भरता हमारे मानव प्रयास के साथ कैसे सहयोग करता है?

> यदि बाइबल को समझना कुछ ऐसा है जो पवित्र आत्मा करता है और न कि ऐसा जो हम करते हैं, तो हम बाइबल की व्याख्या पर काम करने की चिंता क्यों करते हैं? और इसका उत्तर बहुत ही सरल है। परमेश्वर आलस्य का प्रतिफल नहीं देता है। परमेश्वर उस सेवक को अभिषिक्त नहीं करता है जो प्रचार करने के लिए तैयारी नहीं करता। परमेश्वर के कार्य में शामिल होना मेहनत की माँग करता है क्योंकि

> परमेश्वर न सिर्फ हमारे द्वारा कार्य कर रहा है, बल्कि वह हम पर भी कार्य कर रहा है ... बाइबल की व्याख्या की प्रक्रिया में, जो हो रहा है वह सिर्फ ज्ञानात्मक चीज़ नहीं है जहाँ हम उस बात समझने के लिए आते हैं जो बाइबल कहती है, यहाँ एक पवित्रीकरण की प्रक्रिया भी है जो परमेश्वर हम में कर रहा है ताकि हम सिर्फ ऐसे लोग न बनें जो यह समझते हैं कि यह विशेष अनुच्छेद क्या कहता है, लेकिन हम ऐसे लोग बनते हैं जो उस तरीके से ज्यादा सोचते हैं जैसे परमेश्वर हम से चाहता है, वह तरीका जैसा हमें सोचने के लिए, उसके समान चीज़ों को देखने के लिए उसने हमें रचा।
>
> — डॉ. कैरी विन्ज़ैन्ट

पवित्र आत्मा पर निर्भरता का अर्थ यह नहीं है कि जब हम पवित्र शास्त्र की व्याख्या करते हैं तो हमें निष्क्रिय होना चाहिए। वास्तव में, जिम्मेदारी वाली व्याख्या में कड़ी मेहनत शामिल है। हम यह भी कह सकते हैं कि आत्मा पर निर्भरता में उसके द्वारा दिए गए उपकरण और अवसर भी शामिल हैं। आखिरकार, पवित्र आत्मा ने मानवीय साधनों के माध्यम से बातचीत करने के लिए पवित्र शास्त्र को डिज़ाइन किया, जिसमें पाठक के हिस्से में मानव प्रयास शामिल है।

वास्तव में, पवित्र आत्मा आमतौर पर उन प्रयासों के माध्यम से हमें प्रबुद्ध करता है, जिन्हें हम तैयारी में लगाते हैं। जिस प्रकार हमारे शरीर आमतौर पर भोजन खाने की प्रक्रिया के माध्यम से पोषण को प्राप्त करते हैं, उसी तरह हमारे पढ़ने और अध्ययन की प्रक्रिया के माध्यम से उसके वचन की पूर्ण समझ हमें देने के लिए आत्मा आमतौर पर कार्य करता है।

अब, पवित्र शास्त्र के ज्यादातर पाठकों को यह स्पष्ट होना चाहिए कि बाइबल के दूसरे हिस्सों की तुलना में कुछ हिस्सों को अधिक मानवीय प्रयास की आवश्यकता पड़ती है। पैमाने की एक छोर पर, कुछ अनुच्छेद इतने स्पष्ट हैं कि उन्हें समझने के लिए बहुत कम प्रयास की आवश्यकता होती है। सदियों के दौरान, प्रोटेस्टेंट लोगों ने ठीक ही माना है कि उद्धार के लिए विश्वास करने और आज्ञापालन करने के लिए जो आवश्यक है, वह पवित्र शास्त्र में एक जगह या दूसरे में इतना स्पष्ट है कि लगभग हर कोई इसे समझ सकता है। पैमाने की दूसरी छोर पर, पवित्र शास्त्र के कई हिस्से बहुत कठिन हैं, और कुछ को पूरी तरह से समझना भी असंभव हो सकता है।

लेकिन व्यावहारिक रूप से, पवित्र शास्त्र के अधिकांश अनुच्छेद इन दो चरम सीमाओं के बीच एक स्पेक्ट्रम में आते हैं। पवित्र शास्त्र के स्पष्ट हिस्सों को आमतौर पर तैयारी में अपेक्षाकृत कम मानवीय प्रयास की आवश्यकता होती है। लेकिन जब हम अधिक कठिन अनुच्छेद के साथ काम करते हैं, तो पर्याप्त तैयारी के लिए आमतौर पर मानव प्रयास के स्तर में वृद्धि की आवश्यकता पड़ती है।

पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने की तैयारी में मानव प्रयास के महत्व को पहचानने के अलावा, उन कुछ प्रमुख प्रभावों से अवगत होना भी मदद करता है जिन्हें परमेश्वर सामान्य रूप से हमारे मानव प्रयास पर पैदा करता है।

प्रभाव

यदि कोई एक चीज़ जो बाइबल के समझदार व्याख्याकारों को बाधित करती है, तो वह यह है कि उन्हें लगता है कि वे पवित्र शास्त्र का अध्ययन उन तरीकों से कर सकते हैं जो उनके जीवन पर बाहरी प्रभावों को नहीं दर्शाते हैं। हमें लगता है कि किसी तरह हम अपने जीवन के अनुभवों से स्वयं छुटकारा पा सकते हैं और बिना पूर्व धारणा के सीधे पवित्र शास्त्र में जा सकते हैं। लेकिन बाइबल की व्याख्या में हमारे मानव प्रयास के बारे में याद रखने वाली सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक यह है कि हम अन्यथा

करने का कितना भी कठिन प्रयास करें, लेकिन हम हमेशा अनगिनत प्रभावों से प्रभावित होकर पवित्र शास्त्र का अध्ययन करते हैं। और जितना अधिक हम इन प्रभावों के बारे में अवगत होते हैं, उतना ही बेहतर हम यह पता लगाने में सक्षम होंगे कि क्या वे सकारात्मक हैं या नकारात्मक, जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं तो क्या वे हमारी मदद करते हैं या हमें रोकते हैं।

हम प्रयासों पर उन तीन प्रमुख प्रभावों पर विचार करेंगे जिन्हें हम तब काम में लगाते हैं जब हम पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने की तैयारी करते हैं। ये प्रभाव आपस में जुड़े हुए हैं, लेकिन सरलता के वास्ते हम उन पर अलग-अलग रूप में विचार करेंगे। पहला जिसका हम उल्लेख करेंगे वह पवित्र शास्त्र की पूर्व व्याख्या है।

व्याख्या

इस श्रृंखला के उद्देश्यों के लिए, हम व्याख्या को निम्न रूप में परिभाषित करेंगे:

बाइबल के पाठ्यांश से अर्थ को बाहर निकालना

— विशेष रूप से ऐतिहासिक संदर्भ, साहित्यिक प्रारूपों, व्याकरण और शब्दावली का उपयोग, ईश्वरीय-ज्ञान की सेटिंग, और इत्यादि चीज़ों को देखने के द्वारा। हालाँक, हम व्याख्या के बारे में कई सारी बातें कह सकते हैं, लेकिन अभी के लिए, हम सिर्फ यह बताना चाहते हैं कि अतीत में हमने जो व्याख्या की थी, वह हमें व्याख्या के कार्य के लिए तैयार करने में मदद करते हैं।

पवित्र शास्त्र की व्याख्या के साथ हमारी जो भी भागीदारी है, वह हमें बाइबल की और व्याख्या के लिए तैयार करती है। बाइबल के साथ वार्तालाप से जिस ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को हम विकसित करते हैं वे अगली बार जह पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं तब हमें प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, हर बार जब हम बाइबल की शब्दावली और व्याकरण का अध्ययन करते हैं, तो हम पवित्र शास्त्र के इन पहलूओं को अधिक जिम्मेदारी से संभालने की अपनी क्षमता को बढ़ाते हैं। जब हम पवित्र शास्त्र के साहित्यिक प्रकारों को समझने के लिए काम करते हैं, जैसे कि कथा, व्यवस्था, कविता, भविष्यवाणियाँ, नीतिवचन, और इन्ही के जैसे अन्य, तो हम इन्हें बाद में समझने के लिए बेहतर रीति से सुसज्जित हैं। और जब हम बाइबल के प्राचीन इतिहास के बारे में पढ़ते हैं, तो हम और ज्यादा समझ के लिए पवित्र शास्त्र को वापस पढ़ने के लिए तैयार हैं। पवित्र शास्त्र की व्याख्या में लगाया गया हर एक प्रयास हमें आगे के अध्ययन के लिए तैयारी करने में मदद करता है।

एक दूसरे प्रकार का प्रभाव जो व्याख्या-शास्त्र में हमारे मानव प्रयासों को प्रभावित करता है, वह है, समुदाय में हमारे वार्तालाप।

वार्तालाप

दूसरे लोगों के साथ वार्तालाप पवित्र शास्त्र को समझने के लिए हमारे सबसे प्रभावशाली प्रयासों में से एक है, लेकिन अक्सर इसे कम करके आंका जाता है। हम सभी बाइबल की प्रत्यक्ष व्याख्या में शामिल होना चाहते हैं। लेकिन हम इसे पहचानते हों या नहीं, अन्य लोगों के साथ हमारे वार्तालाप से प्रभावित हुए बिना बाइबल की व्याख्या करना लगभग असंभव है। और यह एक अच्छी बात है।

दोनों वर्तमान संसार और अतीत से, अन्य लोगों ने पवित्र आत्मा से महान वरदान और अंतर्दृष्टि प्राप्त की है जो तब हमारी मदद कर सकते हैं जब हम पवित्र शास्त्र की व्याख्या करते हैं। उन्होंने बहुमूल्य संदर्भ कार्यों की रचना की है। वे हमें ईश्वरीय परामर्श देते हैं। वे हमें बाइबल की भाषाओं और साहित्य और इतिहास और अन्य सभी प्रकार की बातों के बारे में सिखाते हैं जो हमें परमेश्वर के वचन को समझने और लागू करने में मदद करते हैं। यहाँ तक कि जो बाइबल हमारे हाथों में हैं वे भी अन्य लोगों से हमारे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पास पहुँचे हैं। वे विद्वानों, अनुवादकों, संपादकों और प्रकाशकों के काम के माध्यम से हमारे पास पहुँचे हैं।

इससे आगे, हमारी कलीसिया और हमारे कलीसियाई शाखा सहित, हममें से अधिकांश के पास विशेष मसीही समुदाय हैं जहां हम सहज महसूस करते हैं। ये समुदाय आम परंपराओं को साझा करते हैं जो कि पवित्र शास्त्र को पढ़ने और समझने के तरीके को प्रभावित करते हैं। और जिस योगदान को हम पादरियों, शिक्षकों और अन्य व्यक्तिगत विश्वासियों से पाते हैं, वे भी कई तरीकों से हमारी मदद करते हैं।

हम दूसरों की सफलताओं, असफलताओं और अंतर्दृष्टि के माध्यम से कई बहुमूल्य बातों को सीखते हैं। हम उन लोगों से सीखते हैं जो हमारे समान हैं और जो हम से अलग हैं, उन से जो अतीत में थे और जो वर्तमान में हैं, उनसे जिन्हें हम व्यक्तिगत रूप से जानते हैं और उनसे जिनसे हम कभी नहीं मिले हैं। चाहे हम इसे पहचाने या नहीं, पवित्र शास्त्र की हमारी सभी व्याख्याएँ अन्य लोगों द्वारा गहनता से प्रभावित होती हैं और होनी चाहिए।

तैयारी में हमारे प्रयासों पर तीसरा प्रमुख प्रभाव हमारा व्यक्तिगत मसीही अनुभव है।

अनुभव

यह कहना उचित है कि मसीही लोगों के रूप में जिस भी चीज़ का सामना हम अपने जीवनों में करते हैं, वह हमारे मसीही अनुभव का हिस्सा है, जिसमें वे बातें शामिल हैं जिन्हें हम पहले ही संबोधित कर चुके हैं, जैसे व्याख्या-शास्त्र और दूसरों के साथ वार्तालाप। इसलिए हमारे अध्याय में इस बिंदु पर हम उन प्रकार की बातों पर ध्यान देना चाहते हैं जिन पर हम सामान्य रूप से तब सोचते हैं जब हम अपने व्यक्तिगत मसीही अनुभव या परमेश्वर के साथ अपने संबंध के बारे में बात करते हैं। मसीही जीवन के ये व्यक्तिगत पहलू विभिन्न तरीकों से पवित्र शास्त्र की हमारी व्याख्या में योगदान करते हैं।

उदाहरण के लिए, हमारा मसीही विकास और पवित्रीकरण बाइबल की व्याख्या करने की हमारी क्षमता को बढ़ाते हैं; जिन तरीकों से हम रहते हैं वे पवित्र शास्त्र को समझने की हमारी क्षमता को बहुत गहराई से प्रभावित करते हैं। जब मसीह के अनुयायी वफादार होते हैं — उन तरीकों में सोचने, कार्य करने, और महसूस करने की कोशिश करते हैं जो परमेश्वर को भावता है — तो वे आमतौर पर पाते हैं कि वे पवित्र शास्त्र से अधिक सीखने के लिए बेहतर रीति से तैयार हैं। लेकिन यदि हमने अपने जीवनों को परमेश्वर के वचन के अनुरूप नहीं बनाया है, तो बाइबल का अध्ययम करना अक्सर गलत व्याख्या और गलत अनुप्रयोग की ओर ले जाता है।

हमारे पिछले अनुभव भी जिम्मेदारी के साथ व्याख्या करने की हमारी क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं। सभी विश्वासियों के पास ऐसे अनुभव हैं जो हमारे सोचने, महसूस करने और व्यवहार करने के तरीकों को आकार देते हैं। और ये अनुभव पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने के हमारे प्रयासों को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति जो अमीर माहौल में पला बढ़ा है, उसके लिए लूका के सुसमाचार में व्यक्त गरीबों के लिए चिंता को समझना मुश्किल हो सकता है। सम्मान पर जोर देने वाली संस्कृति में पला बढ़ा एक व्यक्ति शर्म से संबंधित अनुच्छेदों को बहुत अच्छे से समझ सकता है।

इसके अलावा, प्रत्येक व्यक्ति के पास अलग-अलग व्यक्तिगत ताकत और कमजोरियां हैं, अलग-अलग योग्यताएं और निर्बल पक्ष हैं, पवित्र आत्मा से अलग-अलग वरदान प्राप्त हैं, और निश्चित रूप से अलग-अलग पाप हैं। एक या किसी अन्य तरीके से, जब पवित्र शास्त्र की व्याख्या और लागू करने की बात होती है तो ये सभी बातें हमारी क्षमता को प्रभावित करते हैं।

> हमारे पाप सामान्य रूप से बाइबल में सत्य को समझने की हमारी क्षमता को बाधित करते हैं। बाइबल कहती है कि हम अपने पापी स्वभाव में सत्य को दुष्टता में दबा देते हैं। और इसलिए सत्य को समझने की हमारी क्षमता में पाप के पास

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> एक विकृत करने वाला प्रभाव है। और इसलिए जब हम बाइबल को पढ़ते हैं, और पाप के उस विकृत करने वाले प्रभाव के बिना इसे समझना उन में से एक ऐसी बात है जो करने के लिए पवित्र आत्मा सक्षम बनाता है जिसके लिए हम बहुत आभारी हैं।
>
> — डॉ. के. एरिक थोइनेस

> पाप पवित्र शास्त्र की हमारी व्याख्या को बाधित कर सकता है क्योंकि लोग पवित्र शास्त्र में उस बात को खोजते हैं जो वे खोजना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ शताब्दियों पहले दासों को गुलाम बनाने वालों ने पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने का ऐसा तरीका निकाला था जो दासता को उचित ठहराता था। ऐसा करना उनके स्वयं के आर्थिक हितों में था, इसलिए वे — यदि कभी भी दासों को प्रचार करने के लिए अनुमति देते थे — तो वे इफिसियों 6:5 से प्रचार करते थे जहाँ दासों को अपने स्वामी का आज्ञापालन करना लिखा है। वे 6:9 पर कोई ध्यान नहीं देते थे, हालांकि, जो कहता है, "हे स्वामियो, तुम भी ... उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो।" मेरा मतलब है, यदि आप इसे वास्तव में गंभीरता से लेते हैं — यदि स्वामियों को वास्तव में अपने दासों की सेवा करनी पड़े — तो शायद गुलामी बहुत लंबे समय तक नहीं रहगी। यह एक तरह से आर्थिक प्रोत्साहनों को नष्ट करता है। लेकिन जब लोगों के पास एक एजेंडा होता है जिसके साथ वे पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं और जिस तरीके से वे रहते हैं, उसे वे सही ठहराने की कोशिश करते हैं, तो वे उसी तरह से पवित्र शास्त्र को पढ़ने जा रहे हैं। अब, कभी-कभी लोगों के पास विपरीत समस्या होती है। वे ऐसी परिस्थिति से आ सकते हैं जहाँ वे हमेशा दोषी ठहराये जाने की अपेक्षा करते हैं या वे हमेशा अपराध-बोध की अपेक्षा करते हैं, और वे पवित्र शास्त्र को भी उसी तरह से पढ़ते हैं। अपने पूर्व-धारणाओं के प्रकाश में पवित्र शास्त्र को पढ़ने की बजाय, हमें, जितना संभव हो सके, यह सुनने की कोशिश करने की आवश्यकता है, कि पाठ्यांश का संदेश वास्तव में हमारे लिए क्या है।
>
> — डॉ. क्रेग एस. कीनर

उपसंहार

व्याख्या के लिए हमारी तैयारी पर इस अध्याय में, हमने पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने से पहले की जाने वाली तैयारी के दो महत्वपूर्ण पहलूओं को देखा। हमने जैविक प्रेरणा और आत्मा के प्रदीपन के सिद्धांतों के संदर्भ में पवित्र आत्मा पर अपनी निर्भरता पर विचार किया है। और हमने मानव प्रयास के महत्व को देखने के द्वारा और उन कुछ प्रभावों का सर्वेक्षण करने द्वारा मानव प्रयास की आवश्यकता पर जोर दिया है जिनका प्रभाव परमेश्वर आमतौर पर हमारे व्याख्यात्मक प्रयासों पर डालता है।

बाइबल की व्याख्या की तैयारी दोनों पवित्र आत्मा पर निर्भर होने और बहुत अधिक मानव प्रयास लगाने की हम से माँग करती है। पवित्र आत्मा के लिए सचेत, प्रार्थनापूर्वक समर्पण में हमें पवित्र शास्त्र को पढ़ना चाहिए क्योंकि उसने पवित्र शास्त्र को प्रेरित किया और क्योंकि पिता ने पवित्र शास्त्र को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

समझने के लिए हमारी बुद्धि और हृदयों को प्रकाशित करने के लिए उसे हमारे पास भेजा। लेकिन साथ ही, परमेश्वर ने यह ठहराया कि हमें पढ़ने, अध्ययन करने, दूसरों के साथ वार्तालाप करने और पवित्र शास्त्र को स्वयं अपने जीवनों के मार्ग के हर एक चरण में लागू करने के द्वारा स्वयं अपने प्रयासों को भी लगाना चाहिए। पवित्र शास्त्र की व्याख्या करना एक जटिल परियोजना है, जिसका हमें अपने पूरे जीवन भर में अनुसरण करना चाहिए, इसलिए हमें स्वयं को यथासंभव तैयार करने के लिए सावधान रहना चाहिए। जितना अधिक हम परमेश्वर की आत्मा और अपने मानव प्रयासों पर ध्यान देते हैं, बाइबल की व्याख्या करने के लिए उतना ही बेहतर हम तैयार होंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।